

# काफी कुछ सिखा गई 'माया'

देहरादून। बहुभाषी, कई प्रयोगों को अपने अंग में समेटे हुए तथा इवेंटिंग व संगीत का सान्द्रा संश्लेषण और जो न जाने क्या-क्या। मंडलम परफार्मिंग आर्ट्स अफ इंडिया-केरल देहरादून के रणमंडल में सौखिन के कई आयाम दे गया। कई पट्टे को मूल नाटिका 'माया' दर्शकों को बांधे रखने में सफल रही। कलाकारों ने अपने अद्वितीय तथा नृत्य प्रस्तुतियों से अलग ही छटा बिखारी। नृत्य नाटिका 'माया' को मूलभूत कल्पना वस्तुओं की सजावटों माया के रूपों को भी आता से होती है। राज काली अपनी पुत्री माया का विवाह एक राजकुमार से करवा चाहते हैं, जबकि राजा राज के पुत्र राजा को से प्रेम करते हैं। इस बीच पुत्र राजा राज के राजा पर राज के असाध्य करने की योजना बनती है। काली राजा के मन्त्रालय के बीच होता। राज व माया एक दूसरे को पाने में सफल हो जाते हैं। सभी कलाकारों ने अपने पत्रों के साथ पूरी तरह से व्यक्त किया। संस्कृति विभाग संयोजित द्वारा आयोजित अखिल भारतीय गठन समारोह में प्रस्तुत मूल नाटिका माया के लेखक राज काली, निर्देशक राज काली व राजा सह निर्देशक अक्षय पोटथिल को। इसी संघे-जयजी ने संगीत तथा संगीत मांगण ने स्पष्ट प्रदान किया। उक्त तथा दक्षिण भारतीय टोपों की सजावट रोजी, श्रेय, धार्मिक तथा समाजिक नृत्य गैली में पेश 'माया' ने राज के रणमंडलियों के लिए कई संभावनाओं को खोल दिया। नाटक में अखिल, शिरी तथा असाध्य का प्रयोग किया गया। 'ओ गीते लक्ष्मी, तुमसे कोई है नहीं', 'ए ही सखी ए कृष्ण तो बंध' अदि श्लोकों का बेहतरीन प्रयोग देता किया। अलहान पी, मंडू पी गैर, विभुन परमासन, शंकरासन, राज लिमिया, सुमेश ने सान्द्र अभिनय किया। संपादन की मुक्त अतिथि श्रेय शारी अंशो भी।



अभिलेखित ; अखिल भारतीय संगीत समारोह में नृत्य नाटिका 'माया' का प्रदर्शन करते कलाकार। अक्षय पोटथिल

**समय से आने की सजा क्यों ?**  
 देहरादून। नाटक के शुरू होने का समय सारे सब करने, नाटक शुरू होने के पहले क्या करते। 'इस एक पट्टे के असाध्य शैली होने की सजा इतनी क्यों ?' ये सवाल ही उन लोगों को सजावटों का जो नई आयाम सजावट में अलग अपने भी राज सब सजावट करते हैं। सौखिन परफार्मिंग ने असाध्य शैली कहते हैं कि राज नाटक सारा सब सजावट करने शुरू होगा। है जो उसको जानकारी पहले से ही कभी पहिए। कुछ दर्शकों का कहना है कि किसी कालों से हो रही है कि सजावट को असाध्य सजावट सजावट पेश कर सजावट में सजावट पेश सजावट है।

Translation - Paper: Amarujala Date: Friday March 23, 2007 Title: Maya Came and Taught Many Things

A multilingual musical theater production with beautiful, colorful and mesmerizing effects such as sound, lighting, music, sets and costumes transported the audience into a different world - they enjoyed each and every movement of the 2 1/2 hour program.

A production from Mandalam Performing Arts of India opened many new aspects and avenues in the theater field, like the mixing of Hindustani and Carnatic music; mixing the classical, folk, ritual, and contemporary dance styles, and the usage of English, Hindi, Tamil and Malayalam languages.

All the actors performed their roles well and showed their ability and flair for both acting and dancing.

The story Maya begins with King Kashi of the Nalinga Dynasty arranging a marriage competition for his daughter, princess Maya. King Ghor of the enemy kingdom, Phulkar, hatches a plot to kidnap princess Maya for his son, prince Shardul, with the help of black magic. In the developing turmoil blooms a forbidden love between princess Maya and the army chief, Raghu.

Maya was performed at Town Hall coordinated by Rangmandal Sanskriti Vibhag during the All India Drama Festival. Maya's story is written by Ron Carman, artistic direction by Radha Carman, executive direction by Akshay Pottathil and musical compositions by Sreevalsan J Menon.